एक गुरु की ज़िंदगी का सबसे मुश्किल काम होता है, निराशा में डूबे किसी इंसान के मन में आशा जगाना और उसे आध्यात्म की ताज़ा हवा से रूबरू कराना। यह डगर बड़ी टेढ़ी-मेढ़ी होती है, ठीक वैसे ही जैसे सांप-सीढ़ी का खेल! इस खेल में आगे बढ़ने के लिए गुरु की तरफ से लगातार कोशिशें और शिष्य की ओर से संपूर्ण समर्पण की जरूरत होती है।

हमारी तकदीर अक्सर हमें ऐसी सीढ़ी देती है, जो सांप की तरह नजर आती है, फिर वो चाहे शारीरिक तकलीफ हो या कोई और दुख। जिंदगी की सीढ़ी चढ़ने के लिए अक्सर मुश्किलें तो होती ही हैं, जिसे इस खेल की भाषा में आप सांप कह सकते हैं। फिर भी गुरु लगातार हमारी परीक्षा लेते हैं, ताकि वे हमारे परिणामों से रूबरू हो सकें।

आध्यात्मिक सांप-सीढ़ी

जो पहले से ही जानते हों कि किसी इम्तेहान में हम किस तरह प्रदर्शन करने वाले हैं, उन्हें तो कोई भी परीक्षा लेने की जरूरत ही नहीं। लेकिन फिर भी गुरुदेव हमारी परीक्षा लेते थे।

हममें से ज्यादातर लोग अक्सर उनके इम्तेहानों में फेल हो जाते थे, लेकिन इसके बावजूद वो हमें लगातार यह मौका देते थे कि हम अपनी गलतियां सुधारकर, खुद को समेटकर, फिर से कोशिश करें।

हमारे आध्यात्मिक प्रशिक्षण के दौरान वो एक बेमिसाल फास्ट बॉलर की तरह थे। वो जानते थे कि वे जब चाहें हमें क्लीन बोल्ड कर सकते हैं, लेकिन ऐसा करने से पहले उन्होंने हमें शतक बनाने के लिए बढ़ावा दिया।

वो चाहते थे कि उनके शिष्य आध्यात्म में उनसे भी ज्यादा ऊंचाइयों को छुएं। इसी चाहत में उनका धैर्य और अटल इरादा छिपा हुआ था।

कभी-कभी तो यह इम्तेहान ऐसे होते थे कि हमें पता ही नहीं लगता था कि हमारी परीक्षा ली जा रही है।

एक बार गुरुदेव ने मेरी मौजूदगी में राजपाल जी को अपनी कसौटी पर आज़माया। मैं गुरुदेव के कर्ज़न रोड स्थित दफ्तर के पहले फ्लोर पर उनके साथ बैठा हुआ था, तभी कोई उनके पास आया। गुरुदेव ने उस व्यक्ति से कहा, "जाओ, राजपाल की कार ले जाओ और अपना काम खत्म करके इसे वापस छोड़ देना।"

जब वो व्यक्ति नीचे राजपाल जी से मिलने पहुंच गया, जो ग्राउंड फ्लोर पर थे, तब गुरुदेव ने मुझसे कहा, "मैंने राजपाल से कहा है कि उसे अपनी गाड़ी किसी को भी देने की इजाज़त नहीं है और अब मैंने किसी और से कहा है कि उससे कार की चाबियां ले लो।"

उन्होंने इन शब्दों के साथ अपनी बात खत्म की, "अब देखते हैं वो क्या करता है।"

मैं भी ये जानने को बड़ा उत्सुक था कि राजपाल जी क्या करेंगे। लेकिन वो भी बड़े चतुर और चालाक ठहरे! वो अपनी कार की चाबियां लेकर सीधे गुरुदेव के दफ्तर में आए और उसे टेबल पर रखते हुए कहा, "गुरुजी यह मेरी गाड़ी की चाबी है।" जब वो गए, तो गुरुदेव अपनी हंसी नहीं रोक सके। उन्होंने हंसते हुए कहा, "बड़ा चालाक इंसान हैं। उसने तो इम्तेहान में बड़ा उम्दा प्रदर्शन किया है।"

राजपाल जी एक बार फिर दुविधा में फंस गए, जब गुरुदेव ने उनका इम्तेहान लेने की ठान ली! आइए रवि त्रेहान जी के शब्दों में इस कहानी का ज़ायका लेते हैं।

रवि जी : तो माहौल कुछ ऐसा था कि वो बड़ा गुरुवार का दिन था और सेक्टर 7 में सेवा चल रही थी। कुछ शिष्य नीचे हॉल में सेवा कर रहे थे। गुरुदेव का एक सिस्टम था, कि जब 5-6 शिष्य दो-तीन घंटे तक सेवा करते थे, तो उनसे आधा घंटे का ब्रेक लेने को कहा जाता था और फिर वो अपने-अपने काम पर लौट सकते थे। तो उस दौरान कुछ शिष्य सीढ़ी पर बैठे थे, जिनमें मैं, राजपाल जी और दो और शिष्य शामिल थे।

राजपाल जी को गाने का बड़ा शौक था। तो मैंने उनसे कहा, "राजपाल जी आप ग़ज़ल बहुत अच्छी गाते हैं, क्या आप हमारे लिए गा सकते हैं?" राजपाल जी ने वो ग़ज़ल गाई। कुछ देर बाद जब स्थान पर सेवा खत्म हो गई तो गुरुदेव ने उन्हें बुलाया और कहा, "नीचे सेवा चल रही थी और तुम लोग ऊपर गाने गा रहे थे। क्या यह मरासियों (गाने वालों) का घर है। तुम गाना गाने में व्यस्त थे?" उस दिन के बाद से तो जैसे राजपाल जी अपनी ही आवाज़ खो बैठे और वो ठीक से बोल नहीं पा रहे थे। गुरुदेव ने कहा, "तुम उन मरीजों के बारे में नहीं सोच रहे थे, जो यहां सेवा के लिए आए थे। जब वो गाने सुनेंगे तो उनमें क्या संदेश जाएगा?" इसके कारण राजपाल जी ने लगभग अपनी आवाज खो दी थी और वो लंबे समय तक वैसे ही रहे थे।

तब, एक बार राजपाल जी गुरुदेव के साथ कैंप में आए जो पहाड़ों में था। वहां वो लगातार गुरुदेव से मिन्नतें कर रहे थे, अरदास कर रहे थे कि उन्हें अच्छा कर दें और तब गुरुदेव ने कहा, "चल ये बर्फ खा ले और फिर तू ठीक हो जाएगा।" जरा सोचिए, एक इंसान जो महीनों से अपनी आवाज से जूझ रहा हो, उसे बर्फ के जरिए ठीक किया गया। मैं समझता हूं कि कोई भी डॉक्टर गले की समस्या के लिए बर्फ का इस्तेमाल तो नहीं करता होगा। तो गुरुदेव के पास यह शक्तियां थीं।"

हममें से बहुतों की यही राय है कि गुरु के प्रति समर्पण ही असली सार है।

गुरु की शक्ति आवश्यकता के अनुरूप प्रदर्शित होती है। उनका शारीरिक रूप विनम्र और शालीन हो सकता है, लेकिन जब उनकी चेतना सामाजिक ताने-बाने से निकलकर दिव्य दायरे में प्रवेश करती है, तो हमें उच्च स्तर की शक्तियों का एहसास होता है। शुरुआती दिनों में शिष्य, शागिर्दी की कला में उतने माहिर नहीं थे और वो कई मौकों पर चूक जाते थे।

ऐसी ही एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना शंभू जी के साथ हुई थी। उनके दोस्त और सहकर्मी सुरेश कोहली वो वाक़या बताते हैं,

सुरेश जी : शंभू जी मेरे साथ थे। वो कैंसर से पीड़ित थे। वो मई के महीने की दोपहर की बात है। गुरुजी ने कहा कि शंभू जी को ठीक करना है। उस वक्त नागपाल जी भी उनके साथ थे। हम दोपहर में उनके साथ बैठे हुए थे। गुरुजी ने कुछ जल बनाया, उसे अपने माथे से लगाया और शंभू जी को पीने के लिए दे दिया। शंभू जी ने कहा कि उस गिलास में कीड़े चल रहे हैं

और वो इसे नहीं पी सकते। गुरुजी ने उनसे कहा कि इसे पी ले, इसमें कोई कीड़े नहीं है। उन्होंने मुझे यह गिलास दिखाया और फिर नागपाल जी को भी दिखाया लेकिन हम उसके अंदर कोई कीड़े नहीं देख पाए। जब उन्होंने दोबारा इसे शंभू जी को दिया तो उन्होंने इसे पीने से इनकार कर दिया। तब गुरुजी ने उनसे कहा कि जा तेरी किस्मत है और उन्होंने नागपाल जी को वो जल पीने को दे दिया। शंभू जी इसे नहीं पी सके क्योंकि यह जल शायद उनके लिए था ही नहीं।

शंभू जी ने गुरुदेव के बनाए जल में कीड़े चलते देखे, जबकि उसमें कीड़े थे ही नहीं। कमरे में मौजूद सभी लोगों ने इस बात की पुष्टि की थी। यह शंभू जी का दुर्भाग्य था कि उन्होंने अपने गुरु के शब्दों में आस्था रखने के बजाय अपनी आंखों के भ्रम पर भरोसा किया था।

वो गलतफहमी के शिकार हुए, और गुरुजी द्वारा दिया हुआ जल-रूपी जीवन-दान प्राप्त नहीं कर सके।

किसी का शिष्य बनना आसान नहीं है। एक सिद्ध गुरु की अवचेतन शक्ति का सामना करने के लिए आपको कुशलता और अभ्यास की जरूरत होती है। आपको समर्पण के सही मायने समझना होता है और उसका पालन करना होता है। अक्सर गुरु के मिलनसार और सरल स्वभाव को देखकर लोगों से चूक हो सकती है और वो गुरु की अवहेलना कर बैठते हैं। शिव की शक्ति इस भूल को आसानी से नहीं भूलती और यह सुनिश्चित करती है कि गलती करने वाले को इसकी नसीहत मिले।

ऐसे ही एक शिष्य थे बड़े जैन साहब, जो एक बड़ी चूक कर बैठे और उन्हें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी। वो अपना मानसिक संतुलन खो बैठे और गुरुदेव के द्वारा क्षमा किए जाने के बावजूद उन्हें बाकी के शिष्यों ने क्षमा नहीं किया था। इन शिष्यों ने उनका सम्मान करना बंद कर दिया था।

बिट्टू जी इस कहानी को बताते हैं,

सवाल : बिट्टू जी मेरा सवाल यह है कि गुरुदेव अपने शिष्यों को सबक देते थे, क्या आपको ऐसा कोई किस्सा याद है, मतलब मैंने तो बहुत-से देखे हैं?

बिट्टू जी : जब भी गुरुजी अपने शिष्यों को कुछ बताते हैं तो वो किसी और से इसका जिक्र नहीं करते थे। यदि गुरुजी ने मुझे कुछ बताया है, तो वो बात मेरे और गुरुजी के बीच में ही रहेगी, किसी तीसरे इंसान को इसका पता नहीं चलता था। वो इसे सार्वजनिक रूप से कभी नहीं बताते थे, क्योंकि उन्हें पता था यदि बात बाहर आ गई तो लोग इसका मज़ाक उड़ाएंगे।

इसका सबसे बड़ा उदाहरण थे एस के जैन साहब। किसी जमाने में जैन साहब को पूजा जाता था, लेकिन आगे चलकर वो अपने ही छोटे गुरु भाइयों के सामने मजाक बन गए, जो अक्सर उनका मजाक उड़ाते थे। कोई उन्हें गंजा कहता था, तो कोई उनसे बोलता था, "और जैन क्या है?" वो सबके सामने उनका मजाक उड़ाते थे।

इसके बारे में एस के जैन साहब समेत सभी लोग जानते थे। एक व्यक्ति थे मिस्टर चीरा, जो गुरुजी के दफ्तर में एस के जैन साहब के साथ काम करते थे। एक बार गुरुजी, चीरा साहब और मैं एक ही टेबल पर बैठकर डिनर कर रहे थे। उस समय चीरा साहब ने पूछा, "गुरु जी क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूं?" उन्होंने कहा, "हां पूछो।" चीरा जी ने कहा, "गुरुजी, जैन साहब इतने सम्मानित शिष्य थे, लोग उनकी इज्जत करते थे और मैंने देखा है कि जब लोग आपसे नहीं मिल पाते थे, तो वो जैन साहब से मिलते थे।" वैसे भी जैन साहब, चीरा साहब से बड़े थे। "लेकिन आज मुझे ये देखकर बुरा लगता है कि वो लोग, जो आपके शिष्य हैं, वो उन्हें गंजा और अलग-अलग नामों से बुलाते हैं। कोई भी उनकी बेइज्जती कर देता है।"

मिस्टर चीरा की तरह मैं भी जैन साहब को लेकर फिक्रमंद था कि उनके साथ किस तरह का व्यवहार किया जा रहा था।

जब मैंने गुरुजी से यही सवाल किया तो उन्होंने चुपके से मुझे बताया कि जैन साहब के प्रति जो भी बुरा सलूक होता है, वो उन्हें उन लोगों का कर्ज़दार बना देता है, जो उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। इससे जैन साहब अपने बुरे कर्मों से मुक्त हो जाएंगे।

कभी-कभी इस तरह की बातों को समझाना बड़ा मुश्किल होता था, क्योंकि ऐसी बातों से बहुत-से राज़ बाहर निकल आते थे। दरअसल, जैन साहब उस शक्ति के प्रभाव में थे, जिसने उन्हें शिव स्वरूप में दर्शन दिए थे। जैन साहब को यह भी एहसास हुआ कि वो स्वयं शिव थे। और इस बात को स्वीकार करना उनके लिए बेहद मुश्किल था। वो अपना मानसिक संतुलन खो बैठे और

यहां तक कि उन्होंने गुरुदेव को आध्यात्म के इस साँप-सीढ़ी नुमा खेल में हराने तक की धमकी दे डाली थी। यह सब उसी मानसिक असंतुलन की वजह से था, जिससे वे गुज़र रहे थे।

जैन साहब को अपनी आत्मा के हाथों तकलीफें झेलनी पड़ीं और इसके बाद वे सार्वजनिक रूप से शर्मसार हुए। यह उनकी तकदीर में ही था कि वे उस मुकाम से आगे नहीं बढ़ सकते थे, जिस पर वे पहले ही पहुंच चुके थे।

आइए अब बात का रुख ज़रा मोड़ते हैं।

गुरुदेव अपनी शिक्षाओं में अपनी सोच के विपरीत तरीक़े इस्तेमाल करते थे। कहने का मतलब यह है कि वो अक्सर ऐसी बातें कहते थे, जिन पर वे स्वयं विश्वास नहीं रखते थे। ऐसा करके वह सिर्फ यह देखना चाहते थे कि उनके इस मायाजाल में कौन फंसता है और कौन नहीं।

गुरुदेव कहा करते थे कि वो ऐसा करके बस ये देखना चाहते थे कि उनके शिष्य कितने उतावले हैं और इसीलिए वे उस हद तक जाकर उनकी सतही समझ को आगे बढ़ाते थे। बहुत-से लोग उनके बुने हुए जाल में फंस जाते थे। गुरुदेव इन नाकामियों का जायज़ा लेते और फिर इसे दूर करने के लिए अपनी आध्यात्मिक शिक्षा का तरीक़ा बदलते थे। अपने शिष्यों में सुधार करना एक लंबी लड़ाई थी, लेकिन गुरुदेव ने कभी हार नहीं मानी।

पूरण जी ऐसी और घटनाएं याद करते हैं, जिनमें गुरुदेव ने अपने शिष्यों को परखा था।

सवाल : क्या वे अपने शिष्यों की काफी परीक्षाएं लेते थे?

पूरण जी : हां

सवाल : क्या आपको ऐसी कोई परीक्षा याद है, जो उन्होंने ली थी?

पूरण जी : कैप्टन शर्मा

सवाल : वो क्या थी?

पूरण जी : कैप्टन शर्मा ने खाने में देसी घी की मांग की थी। वो लंगर का खाना खाने से मना करते थे। कहते थे, "मैं ब्राह्मण हूं मैं खाने में देसी घी खाऊंगा। हमने उन्हें देसी घी में बना खाना दिया। लेकिन वो उसे नहीं खा सके। उन्होंने खाना ही छोड़ दिया और बहुत बीमार पड़ गए। वो कुछ भी नहीं खा पाए थे।

सवाल : कब तक? सालों तक?

पूरण जी : हां लगभग एक साल या शायद उससे भी ज्यादा समय तक।

सवाल : एक साल से ज्यादा?

पूरण जी : हां, हां।

ये देसी घी मांगने की सजा नहीं थी। यह तो उस शिष्य को अनुशासित करने का प्रयास था, जो बड़बोलेपन का शिकार थे, अपनी सेवा करने वाले लोगों से रूखा व्यवहार करते थे और हमेशा सबका ध्यान पाना चाहते थे।

संतलाल जी भी अपने शुरुआती दिनों में ऐसी ही एक दोहरी मुश्किल में फंस गए थे।

उन्होंने गुरुदेव से झूठ बोला और उन्हें इसकी सज़ा मिली। उन्हें ऐसी खारिश होने लगी, जिसका कोई इलाज ही नहीं था।

इस सजा के चलते वो अपनी एक महिला सीनियर के साथ एक नई मुश्किल में फंस गए। उन्होंने बड़े शर्मसार होकर, बहुत झिझकते हुए ये बात बताने की हिम्मत जुटाई।

सोनीपत के यह शेर अपने उस कमजोर पहलू को उजागर करते हैं,

संतलाल जी : उस वक्त मैं रोहतक में पदस्थ था और मेरी बॉस एक महिला थी, जो बंगाल से थी। मुझे खारिश थी। उन्होंने हमारे डिस्ट्रिक्ट इंचार्ज डॉ सिक्का से मेरी शिकायत कर दी।

उन्होंने शिकायत की कि मैं ऐसा हूं, वैसा हूं, बदमाश हूं क्योंकि मैं उनके सामने अपनी खारिश करता था। मैं मदद के लिए गुरुजी के पास गया। मैंने कहा, "महाराज मुझ पर रहम करो।" मैंने अपनी इस खारिश के बारे में उनसे बताया और उनसे इसके इलाज की भीख मांगी। आप यकीन नहीं मानेंगे मैं एक लोहे की रॉड से खारिज करता था और उस जगह से खून निकलने लगता था। मुझे खून के कारण दिन में दो बार अपनी सफेद शर्ट बदलना पड़ती थी। अपनी बनियान भी।

मैंने गुरु जी से कहा कि ऐसा है। वो लेडी डॉक्टर भी स्थान पर आती थी और उन्होंने मुझ पर इल्जाम लगाया था। मैंने गुरुजी से कहा, "आप बताइए क्या मैं ऐसा हूं..." वह बहुत हंसे। वो खूब हंसे और उन्होंने कहा, "ऐसा कुछ भी नहीं है तुम फिक्र मत करो।" फिर गुरु जी ने अपने स्तर पर कुछ ऐसा किया कि हर सुबह ठीक 9 बजे मेरी खारिश बंद हो जाती थी।

सवाल : रात में 9 बजे?

संतलाल जी : नहीं सुबह के 9 बजे, जब मैं ऑफिस के लिए निकलता था, तो उसके ठीक पहले मेरी खारिश बंद हो जाती थी। लेकिन जैसे ही शाम के 5 बजते थे और मैं काम से लौटता था, तो वो फिर शुरू हो जाती थी!

सवाल : मतलब घड़ी के हिसाब से?

संतलाल जी : (हंसते हुए) हां बिल्कुल, आप घड़ी मिला सकते थे। जैसे ही खारिश शुरू होती थी, तो मैं समझ जाता था कि शाम के 5 बज चुके हैं और यह शुरू हो चुकी है।

(जोर की हंसी)।

संतलाल जी एक ऐसे सरकारी मुलाजिम थे, जो अपने गुमान में चूर रहते थे और अपने शासकीय अधिकारों का जमकर इस्तेमाल करते थे। फिर गुरुदेव ने अपना करिश्मा दिखाया और इस शेर को एक संत बना दिया, एक ऐसा संत, जो लोगों के प्रति दया और करुणा रखता था, जिसने कई लोगों की सेवा की लेकिन फिर भी उनमें थोड़ा अहम ज़िंदगी भर रहा।

संतलाल जी का आध्यात्मिक विकास बड़ी तेजी से हुआ और गुरुदेव ने उन्हें कई राज की बातें सिखाई थीं। इनमें से एक के बारे में वो खुलकर बताते हैं।

संतलाल जी : मैं यहां आपको एक छोटी-सी बात बताना चाहता हूं। मैं एक बहुत अच्छी पोस्ट पर हुआ करता था और फिर मैंने वीआरएस (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति) ले लिया। उस समय लाखों की संख्या में लोग लंगर में खाना खाने आते थे, तो खाना पत्तल (पत्तों से बनी प्लेट) में परोसा जाता था और जब उनका खाना हो जाता तो हमको पत्तल इकट्ठा करके उसे फेंकना होता था। मैं इतने बड़े ओहदे पर था कि पत्तल जमा करने के बारे तो मैं कभी सोच भी नहीं सकता था। हालांकि जब गुरुजी ने मुझे इस काम में लगाया, तो मैंने अपनी इच्छा से इसे किया। तब मैंने यह एहसास किया कि मैं अपने अहम में इतना चूर था कि ऐसा करना तो दूर, मैं इसके बारे में सोच भी नहीं सकता था। चूंकि मैं गुरुदेव को दिल से मानता था, तो उनका हर निवेदन मेरे लिए आज्ञा होती थी। इस तरह उन्होंने मेरे अहंकार को दूर करने में मेरी मदद की।

सवाल : तो उस दिन के बाद से आपका अहंकार पूरी तरह दूर हो गया?

संतलाल जी : नहीं है, अहम जैसी चीजें पूरी तरह कहां जाती हैं। हालांकि वो कम जरूर की जा सकती हैं। इस बारे में कोई दो राय नहीं है। उन्हें मेरी सेवा करनी पड़ी। तो पहले उन्हें मुझे शर्मिंदगी से बचाना पड़ा कि किसी को बुरा भी ना लगे और काम भी हो जाए। यह उनका तरीका था। उस समय मैं किसी की नहीं सुनता था, क्योंकि मैं बहुत यंग था और मेरा काम और ओहदा ही ऐसा था कि जो भी मेरे पास आता था, वो हाथ जोड़कर ही सामने आता था। तो ऐसे में थोड़ा बहुत अहम तो आ ही जाता है। हालांकि उस दिन के बाद मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ।

संतलाल जी के साथ मेरा बड़ा अच्छा संबंध था। असल में हम दोनों को ही बारी-बारी से गुरुचरण की प्राप्ति हुई थी। हालांकि यह सुनने में बड़ा धार्मिक लगेगा लेकिन गुरुचरण की प्राप्ति का मतलब है आपके मस्तिष्क और इससे परे, उस चक्र का सक्रिय होना। जब आपकी चेतना आपके मस्तिष्क के चक्र के स्तर तक पहुंच जाती है, तभी आप इस प्राप्ति के योग्य हो पाते हैं।

इस पॉडकास्ट में बताईं गई कुछ कहानियां गुरु अवहेलना के विचार पर रोशनी डालती हैं। यह ऐसा विषय है जिसे बहुत-से लोग बमुश्किल ही समझ पाए। गुरु अवहेलना ना तो गुरु का क्रोध है, ना उनके प्रति अनादर। यह ना तो उनकी अवज्ञा है, ना ही उनसे झूठ बोलना! यह संभवतः इन सभी बातों का मिलाजुला असर है। इसका परिणाम सज़ा होती है ताकि अवहेलना का यह बोझ ज्यादा समय तक जमा ना रह पाए।

ऐसे में गुरु की सज़ा, दरअसल परोक्ष रूप से गुरु की कृपा होती है और यह कृपा राजपाल जी, संतलाल जी, बड़े जैन साहब, मल्होत्रा जी और बाक़ियों के साथ-साथ मुझ पर भी रही।

ये सुनने में थोड़ा अजीब लगेगा कि अक्सर गुरु अवहेलना की सज़ा एक इनाम भी होती है, क्योंकि गुरु अवहेलना करने वाले इंसान की जीवात्मा नहीं चाहती कि वो इस बोझ को आगे तक ले जाए। इसलिए वो इंसान गुरु अवहेलना का प्रभाव निष्क्रिय करने का प्रयास करता है।

रोशनी गुरु अवहेलना का एक उदाहरण बताती हैं, जिससे साफ तौर पर यह ज़ाहिर होता है कि उन्हें एक सज़ा से नवाज़ा गया था। उन्होंने इसमें अपना वक्त लिया। आखिर वो एक बेफिक्र इंसान जो ठहरीं! गुरुदेव ने उस अवहेलना पर प्रतिक्रिया दी और उसे निष्क्रिय कर दिया। रोशनी को भले ही इसमें वक्त लगा हो, लेकिन गुरुदेव ने प्रतिक्रिया देने में जरा भी देर न लगाई थी।

क्या आपको लगता है कि गुरुदेव संभवतःयह बात जानते थे कि एक दिन वो उनकी जीवनी लिखेंगी? शायद यही बात होगी...

सवाल : तो आपके हिसाब से गुरु अवहेलना दरअसल क्या है?

रोशनी जी : मैं आपको अपने उदाहरण से गुरु अवहेलना के बारे में समझाती हूं। कई साल पहले मैं बड़ी नकारात्मकता के दौर से गुजर रही थी और उस दौरान मेरे अंदर विश्वास की कमी हो गई थी। और अब मुझे पता नहीं है कि मैंने ऐसा क्या कहा या किया था, जो मैं उस दौरान गुरु अवहेलना की दोषी बन गई थी। हालांकि दिलचस्प बात यह है कि उस समय के बाद मेरी नकारात्मकता खत्म हो गई। मुझे लगता है कि कुछ हफ्तों या एक महीने बाद मैंने खुद को सपने में किसी से यह कहते हुए देखा कि मैंने नकारात्मकता की उस अवधि में गुरु अवहेलना की थी और अब मैं इससे बाहर आ गई हूं।

तो इस सपने के कुछ वर्षों के बाद, मुझे लगता है कि ये 2015 की गर्मियों की बात है। मैं सुबह उठी और मेरे शरीर के बाएं हिस्से में बहुत तेज दर्द हो रहा था। तो मैंने कुछ दिन इस दर्द के खुद-ब-खुद ठीक होने की राह देखी और जब ऐसा नहीं हुआ, तो मैं इसे दिखाने डॉक्टर के पास गई। जब मैं डॉक्टर के पास पहुंची तो डॉक्टर ने कहा कि मैं कोलाइटिस से पीड़ित हूं और उन्होंने मुझे दवाइयां लिखीं। लेकिन दवाइयां लेने के बाद मेरी हालत में कोई सुधार नहीं हो पा रहा था। और आप जानते हैं कि जब मैं इस दर्द से गुजर रही थी, तो मैं मन में ये जानती थी कि मुझे गुरु अवहेलना की सजा मिल रही है, जो मैंने कई साल पहले की थी। आप जानते हैं कोई भी दवाई मेरे काम ना आई। मेरी हालत लगातार बिगड़ती जा रही थी। यहां तक कि मैं रात को ठीक से सो नहीं सकती थी। मैं दाल-चावल के अलावा कोई भी खाना नहीं खा पाती थी। फिर इस हालत में रहते हुए साढ़े तीन महीने बीत गए और मैं एक रात बहुत ज्यादा परेशान और तनावग्रस्त थी और मैंने मन में गुरुदेव से निवेदन किया और मैंने कहा कि कृपया आकर मेरी मदद करें। जब मैंने अपने मन में उनसे निवेदन किया, उसके दो-तीन दिन बाद वो मेरे सपने में आए और जब मैं अगली सुबह उठी तो मैं देखती हूं कि पिछले साढ़े तीन महीने से मैं जिस दर्द से गुजर रही थी, वो जा चुका था। और मैं सामान्य हो चुकी थी। तो मैंने गुरु अवहेलना का असर देखा है और फिर मैंने गुरु कृपा को भी साक्षात होते देखा।

सवाल : तो असल में क्या वो गुरु कृपा थी, जिसने गुरु अवहेलना से उबरने में आपकी मदद की?

रोशनी जी : हां वो गुरु कृपा थी।

गुरुदेव सजा देने के मामले में भी बड़ी रियायत बरतते थे। वो हमें सिर्फ छोटी-मोटी शारीरिक चोट देकर हमारी सज़ा से मुक्त कर देते थे। मुझे सज़ा के रूप में एक मोच मिली थी! बेशक यह मोच काफी दर्द भरी थी, लेकिन ये सिर्फ तीन दिनों तक ही टिकी।

राजपाल सेखरी कुछ महीनों की गले की तकलीफ के बाद मुक्त हो गए। संतलाल जी को थोड़ी खारिश हुई, लेकिन जैन साहब को कुछ ज्यादा ही भुगतना पड़ा।

यदि दूसरे गुरुओं के कड़े प्रतिशोध वाले दंड से इनकी तुलना की जाए, तो ये सज़ाएं तो कुछ भी नहीं थीं।

मैं एक गुरु के बारे में जानता हूं, जिन्होंने अपनी अवहेलना किए जाने के चलते एक महिला की गर्भावस्था को कई दफा चार महीनों से ज्यादा टिकने नहीं दिया। अंत में वो महिला मदद की गुहार लिए गुरुदेव के पास पहुंची। यह उस समय की बात है, जब गुड़गांव के शिवपुरी में गुरुदेव ने स्थान की शुरुआत की थी और वो महिला शुरुआती मरीजों में से एक थीं।

मैं भी एक ऐसे परिवार से रूबरू हुआ, जो टोरंटो में लाल साहब के स्थान पर आया करते थे। उस परिवार के पूर्व गुरु और उनके शिष्य, इस परिवार की स्वप्न-अवस्था में लगातार उन पर मानसिक आघात कर रहे थे, जिसका असर उनकी सेहत पर पड़ रहा था।

दुर्भाग्य से गुरु-अवहेलना से मुक्ति पाना आसान नहीं है और इसके परिणाम तो भुगतने ही पड़ते हैं।

मेरे मन में एक और ख्याल आ रहा है। आइए मैं वो बताता हूं।

तो स्कूल में पढ़ाई में गुरुदेव की कोई दिलचस्पी नहीं थी, ठीक?

इसलिए, उन्हें तो परीक्षा एवं इम्तेहानों से नफरत होनी चाहिए, है ना!

लेकिन उन्हें तो अपने सभी शिष्यों के इम्तेहान लेना बहुत अच्छा लगता था, ठीक?

तो क्या हम इसे जायज़ ठहराएंगे?

उनके इम्तेहान भी बड़े अजीब होते थे और वो उनके जीवन के पश्चात भी जारी हैं। उनकी नजरों से बचकर निकल जाने का कोई रास्ता नहीं है।

डॉ शंकर नारायण भी इस बात के गवाह हैं।

गुरुदेव उनके अहंकार और अभिमान का स्तर परखना चाहते थे। उन्होंने डॉ शंकर नारायण से कहा कि वो मल्होत्रा जी से मंत्र ले लें और इस तरह से गुरुदेव ने आध्यात्म में उन्हें उनका ओहदा बता दिया। लेकिन कुछ दिनों बाद गुरुदेव ने उनसे कहा कि उन्हें मल्होत्रा जी के सम्मान में उनके पांव छूने की कोई जरूरत नहीं है। फिर उन्होंने यह देखने के लिए इंतजार किया कि अब आगे क्या होता है।

मगर डॉ शंकर नारायण तो ठहरे सीधे-सादे और उन्होंने मल्होत्रा जी के प्रति अपना सम्मान जारी रखा, जो उनके ऑफिस में तो उनसे जूनियर थे, लेकिन आध्यात्मिक रूप से उनसे सीनियर थे। इस तरह अनजाने में डॉ शंकर नारायण ने महागुरु के दिल को भी छू लिया।

डॉ शंकर नारायण जी : एक बार ऐसे ही चर्चा करते हुए गुरुदेव ने मुझसे कहा, “मल्होत्रा जी कुछ नहीं है, उनके पांव छूने की कोई जरूरत नहीं। और मैं आपको बता दूं कि दो मंत्रों के बाद प्रमुख मंत्र होता है महामृत्युंजय मंत्र और उन्होंने मुझे मल्होत्रा जी से यह मंत्र लेने को कहा था। मल्होत्रा जी मेरे ऑफिस में टेक्निकल असिस्टेंट हैं। लेकिन मैं फिर भी सुबह गया और उनसे वो मंत्र लिया। तो मैं हमेशा मल्होत्रा जी का बहुत सम्मान करता था।

उस खास दिन पर गुरुजी ने मुझे कहा था कि मल्होत्रा जी कुछ भी नहीं है और उनके पैर छूने की कोई जरूरत नहीं है। लेकिन मैंने इसके जवाब में हां या ना कुछ भी नहीं कहा। फिर अगली सुबह मल्होत्रा जी हमेशा की तरह अचानक मेरे घर आ गए। मैंने दरवाजा खोला और उन्हें देखा। वो सुबह के समय मेरे घर कभी नहीं आते थे, फिर आज वो कैसे आए हैं। उन्हें देखकर मैंने उनके पैर छुए। मल्होत्रा जी वहां कुछ मिनट भी नहीं ठहरे और तुरंत लौट गए। फिर मैं ऑफिस जाने की तैयारी में था। मैं यह सोचकर डरा हुआ था कि गुरुजी ने मुझे मल्होत्रा जी के पैर नहीं छूने को कहा था। और मैंने उनकी बात नहीं मानी, तो कुछ ना कुछ तो होगा। मैं उनके ऑफिस गया और हमेशा की तरह गुरुजी अपने सॉइल सैंपल रूम में बैठे हुए थे। जब मैं अंदर गया तो उन्होंने कहा, "तूने आज मुझे खरीद लिया है।" तब मुझे बड़ी खुशी हुई क्योंकि वो जिस चीज का इम्तेहान ले रहे थे, मैं उसमें पास हो गया था (हंसते हुए)।

इस घटना से तो मुझे डॉक्टर शंकर नारायण से ईर्ष्या होने लगी है! मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि आखिर डॉ शंकर नारायण इतनी सारी परीक्षाएं कैसे पास कर सकते हैं? जबकि मैं तो गुरुदेव की लगभग सभी परीक्षाओं में फेल हुआ हूं। क्या आपको लगता है कि वो दफ्तर में सीनियर थे,

इसलिए गुरुदेव उनका इम्तेहान लेने से पहले ही, उन्हें प्रश्न-पत्र दे दिया करते थे? बहरहाल, यह तो मेरी समझ के बाहर की बात है!

राजीव जी करीब 30 वर्षों से सेवा कर रहे हैं। वो एक ऐसे शिष्य की कहानी बड़े करीब से जानते हैं, जिसे काटों भरी राह पर चलकर अपने इम्तेहान से गुजरना पड़ा।

राजीव हज़ारत जी : यह मामला उस इंसान के जेहन में आया, जो स्थान पर पहुंचा था और इसने मुझे इस मशहूर वाक्य की याद दिला दी, "ही मूव्स इन मिस्टीरियस वेज़, हिज़ वंडर्स टू परफॉर्म (उनका हर कदम रहस्यमयी है और उनके चमत्कार देखने लायक हैं)।" और ज़रा इसे सुनिए। यह भी बड़े कमाल की बात है। तो वो व्यक्ति, जो स्थान पर आए थे, उन्हें एक लाइलाज बीमारी थी। और स्थान पर उनका उपचार किया जा रहा था। लेकिन उन पर सामान्य इलाज की टेक्निक इस्तेमाल नहीं की जाती थी। उन्हें तो सिर्फ स्थान पर बैठकर वहां आने वाले लोगों से चर्चा करनी पड़ती थी। उनकी तस्वीर को रिमोट ट्रीटमेंट ग्रुप पर डाला गया था। लेकिन इसके कोई ठोस नतीजे नहीं मिल रहे थे। और फिर गुरु की ओर से संदेश आया कि थोड़ा हटकर सोचें। तो इस व्यक्ति से अलग-अलग काम करवाए गए। उनसे बड़ा रूखा व्यवहार किया गया। यहां तक कि उनसे छोटे-मोटे काम कराए गए जैसे कि सेवा से पहले और सेवा के बाद उनसे पूरे स्थान की झाड़ू लगवाना। उनसे जरा भी विनम्रता से व्यवहार नहीं किया जाता था। इस व्यक्ति को मानना पड़ेगा कि उन्होंने एक शब्द बोले बिना यह सब किया। और फिर इस अजीब से इलाज से वो आज 85% से 90% तक ठीक हो चुके हैं और वो स्थान पर सेवा कर रहे हैं। तो ये अलग सोच वाकई कारगर रही।

आइए अब इस चर्चा को दूसरी दिशा में ले चलते हैं।

संतलाल जी और हममें से ज्यादातर लोगों ने कई मौकों पर जो महसूस किया वो दरअसल गुरु-कृपा थी।

सुनने में तो कृपा बहुत छोटा शब्द लगता है, लेकिन इसके बड़े गहरे मायने हैं। गुरु-कृपा, जिंदगी का मकसद पूरा करने, स्वयं की रक्षा करने, खुद में सुधार लाने और जरूरत पड़ने पर सज़ा के लिए तैयार रहने का आशीर्वाद होता है। अंत में गुरु-कृपा का मतलब है कर्मों, इंद्रियों, मोह-माया और इससे जुड़ी तमाम संसारिक बातों से मुक्ति पाना।

गुरुदेव का यही मिशन था कि वो हमारे दिव्य स्वरूप से हमारा परिचय कराएं। उन्होंने कहा था, “मैं पूरे ब्रह्मांड में घूम चुका हूं, लेकिन मैंने ईश्वर को नहीं देखा। वो जो भी हैं, आपके भीतर ही हैं।”

हमने कभी किसी ग्रंथ या अद्वैत के विचारों पर चर्चा नहीं की। उन्होंने कभी ये नहीं कहा कि अहम् ब्रह्मास्मि। वो बड़ी सरलता से ब्रह्मांड की वास्तविकताओं को अपने एक-वाक्यों से समझाते थे।

सुमंत ने आदित्य से चर्चा की, जो पहले एक मरीज थे, बाद में एक अनुयायी बने और अब एक सेवादार हैं, जो दूसरों का इलाज करके अपने ऋण चुकाते हैं।

सवाल : आदित्य हमें बताइए कि कौन-सी बात आपको सबसे पहले मुंबई में स्थान पर लाई थी। और फिर किस बात से प्रेरित होकर आप लगातार वहां आने लगे, क्योंकि मेरी जानकारी में तो आप पिछले कई सालों से स्थान पर आ रहे हैं?

आदित्य जी : साल 2006 में मैं जिंदगी में अपनी व्यक्तिगत मुश्किलों से जूझ रहा था और मेरी मां की एक बड़ी करीबी दोस्त ने मेरी मां से स्थान के बारे में बताया और फिर मेरी मां एक बार मुझे स्थान लेकर आई थीं। मैं उस समय अपने तलाक से गुजरा था और मेरी दिमागी हालत ठीक नहीं थी और इसे लेकर मुझे ब्रेन स्ट्रोक भी हो चुका था। मैं अपने होशो हवास में नहीं था और जब मैं वहां आया था, तो मैं मानसिक तौर पर बड़ा विचलित था। मुझे स्थान पर आकार 101% आराम मिला। मुझे पूरी तरह आराम मिला और इस तरह स्थान के प्रति मेरा विश्वास बढ़ता गया।

सवाल : क्या आपको उस वक्त यकीन था कि आपको स्थान से ही मदद मिली, ना कि डॉक्टरों की दवाइयों से?

आदित्य जी : मैं सिर्फ इतना कहूंगा कि आप स्थान पर आते हैं और वहां स्थान आपका उपचार करता है, आपका मार्गदर्शन करता है लेकिन एक सही समय पर, सही डॉक्टर से मिलने के बाद

चीजें ठीक होने लगीं। तो मेरा मानना है कि यह गुरु की और स्थान की कृपा थी, जिससे ये संभव हो सका।

गुरु की कृपा का असर कई गुना होता है। गुड्डन जी तो कुछ ही महीनों में एक गंभीर रोगी से एक सिद्ध संत बन गई थीं। अपने शहर के बाहर गुरुदेव का जो पहला स्थान बना था, वो कानपुर में गुड्डन जी का ही घर था। गुड्डन जी के भाई सुरेंदर जी गुरु-कृपा की ये कथा सुनाते हैं।

सवाल : सुरेंद्र जी आप हमें बताएं कि आप गुरुदेव के संपर्क में कैसे आए थे?

सुरेंदर जी : देखिए, इसका पूरा श्रेय गुरुदेव को जाता है। मतलब यह कि उन्होंने हमें बुलाया था, इसमें हमारा बहुत ज्यादा कुछ योगदान नहीं था। लेकिन यदि आप वैसे देखें तो जिस व्यक्ति के कारण हम गुरुदेव के संपर्क में आए थे वह थी गुड्डन, जिसकी वजह से हम उनसे मिले थे। एक बार गुड्डन बहुत बीमार पड़ गई और बहुत तकलीफ में थी। जब वो 5 साल की थी, तब से ही उसे वो दर्द रहता था। उसकी प्रमुख बीमारी आर्थराइटिस थी। उसके हाथ, पैरों और जोड़ों में बहुत सूजन रहती थी। उसका बहुत इलाज कराया लेकिन कोई खास फायदा नहीं हुआ। हम इसी सिलसिले में गुरुदेव से मिले, क्योंकि हमें पता चला था कि ऐसे कोई गुरु है। गुरुजी ने उस समय कहा था कि वे दवाइयां नहीं चलाते हैं। हमें पता था कि यदि हम गुड्डन को गुरुजी के पास ले जाते हैं, तो हमें उसकी दवाइयां बंद करनी पड़ेगी। हम कोई दवाइयां इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे।

सवाल : गुड्डन कितने सालों तक दर्द में रही थी?

सुरेंदर जी : 14 साल से ज्यादा हो गए होंगे। इस बात के कोई आसार नहीं थे कि वो दवाइयां छोड़ेगी तो अच्छी हो जाएगी। ऐसे में अचानक दवाइयां छोड़ने का तो सवाल ही नहीं उठता था, लेकिन इसे हम गुरुजी की प्रेरणा ही कहेंगे। वो गुरुजी का तरीका था। गुरुजी ने हमें दवाइयां छोड़ने को नहीं कहा था, वो तो हमने जो गुरुजी के उपचार के बारे में सुना था, उससे ही हमने दवाइयां छोड़ दीं। हमने सोचा कि ठीक है। फिर गुड्डन के दिमाग में जाने क्या आई कि उसे लगा कि सिर्फ गुरुजी ही उसका इलाज कर सकते थे।

सवाल : जब आप गुरुदेव से पहली बार मिले तो आपकी सबसे पहली चर्चा क्या थी?

सुरेंदर जी : देखिए गुरुदेव से हमारी कोई लंबी चर्चा नहीं हुई क्योंकि तब गुरुजी शिवपुरी में रहते थे और उनका अपार्टमेंट बहुत छोटा था। उसमें दो कमरे थे, एक कमरे में स्थान था और एक में उनका अपना कमरा था। गुरुजी ने जब गुड्डन को पहली बार देखा, तो गुड्डन का दाहिना पैर मुड़ा हुआ था। इसका मतलब यह कि पैर का अंगूठा एक तरफ था और बाकी की उंगलियां दूसरी तरफ थीं।

सवाल : इसका मतलब है पूरा पैर ही मुड़ा हुआ था!

सुरेंदर जी : हां बिल्कुल। पैर का अंगूठा एक तरफ और बाकी उंगलियां दूसरी तरफ, बिल्कुल 180 डिग्री पर हो गई थीं। जब इस तरह पैर मुड़ा हुआ था और घुटने में सूजन थी तो वो फिर पलंग से कैसे उठ सकती थी?

राजलक्ष्मी जी (गुड्डन) : कोई कपड़ा भी छू जाता था तो मैं दर्द से कराह उठती थी। इतना दर्द होता था।

सुरेंदर जी : तो गुरुजी स्थान पर आए, स्थान बहुत छोटा था। एक तरफ दीवान था। गुरुजी आए और वहां बैठ गए। गुड्डन जमीन पर बैठी थी। गुरुजी ने उसे दो-तीन मिनट तक देखा और फिर उसे खड़े होने को कहा। जहां का जोड़ मुड़ा हुआ था, उन्होंने अपना एक हाथ वहां रखा और दो-तीन मिनट में धीरे-धीरे उन्होंने उसका पैर सीधा कर दिया। गुरुजी ने उससे पूछा, “क्या अब दर्द हो रहा है?” गुड्डन ने कहा, “नहीं।”

सवाल : तो गुरुदेव ने सिर्फ दो मिनट में पैर सीधा कर दिया?

सुरेंदर जी : मुझे लगता है दो मिनट कहना भी बहुत ज्यादा होगा।

सवाल : तो जब आप यह सब देख रहे थे तो आपको आश्चर्य नहीं हुआ? आपके दिमाग में उस वक्त क्या चल रहा था?

सुरेंदर जी : उस समय हमें आश्चर्य नहीं था। हम तो एक चमत्कार होते देख रहे थे।

विश्वास एक ऐसा जरिया है, जिसके सहारे कोई इंसान सांप से बचकर सीढ़ी चढ़ जाता है। इसके नतीजे में आपका विकास होता है, चाहे वो शारीरिक विकास हो, या फिर व्यावसायिक या आध्यात्मिक विकास! विश्वास की कमी असल में पतन की ओर ले जाती है।

रवि त्रेहन जी एक शिष्य हैं, जिन्होंने महागुरु के सम्मान में एक उर्दू शायरी लिखी है,

अपने गुरु के हाथ बस बेफिक्रे होकर थाम ले
कह दे तेरी मर्ज़ी, मुझे हर हाल में मंज़ूर है

गुरु की कृपा कई रूपों में सामने आती हैं। इन रूपों में एक रूप है रक्षा। रक्षा के अनेक रूपों में एक रूप है अपने आप से, अपने लालच से, इंद्रियों से और ऐसी ही कमियों से रक्षा, जो इस आध्यात्मिक सांप-सीढ़ी के खेल में, अक्सर सामने आती हैं!

गुरु की रक्षा अक्सर तब भी देखने को मिलती है, जब हमारे साथ होने वाली बहुत-सी दुर्घटनाएं या तो टल जाती हैं या फिर इनका असर कम हो जाता है और यह गुरु की कृपा से ही संभव होता है।

गिरि जी एक घटना याद करते हुए इसी बात को मुकम्मल करते हैं,

गिरी जी : एक बार मैं सड़क के रास्ते से अपनी पत्नी, बेटी और ड्राइवर के साथ नासिक से मुंबई आ रहा था। हम लोग कसारा घाट के आखिरी घाट से नीचे उतर रहे थे, जब आप मुंबई से नासिक आते हैं। तब मेरी पत्नी ने कहा, "ध्यान से चलाओ, नहीं तो हमारा एक्सीडेंट हो जाएगा।"

इसके दो मिनट बाद ही मेरा अपनी जिंदगी का सबसे बड़ा एक्सीडेंट हुआ। हमारी कार 20 फीट गहरे गड्ढे में गिर गई, लेकिन हमें कुछ भी नहीं हुआ। पूरी कार चकनाचूर होकर पलट गई थी, लेकिन मेरे ड्राइवर को, मेरी पत्नी को, मुझे और मेरी बेटी को कुछ भी नहीं हुआ था। हमें खरोच तक नहीं आई थी और हम कार से बाहर निकल आए।

जब इस परिवार की बात चल रही है तो आइए गिरी जी की साली पुंचू से भी चर्चा कर लेते हैं,

पुंचू जी : मुझे याद है जब मेरी मां गुजर गई थीं, तो उन्होंने बड़ी शांति से इस दुनिया से विदा ली थी। वो बस पलंग पर बैठी हुई थीं। मेरे पिताजी कमरे में आए और उन्होंने मेरी मां को गुरुजी की तस्वीर के सामने हाथ जोड़े देखा था। पिताजी बाहर गए और आधे घंटे बाद जब वो कमरे में आए तो मेरी मां जा चुकी थीं।

सुबह शिकागो से सुरेंदर जी ने मेरे पिता को कॉल करके उनसे पूछा कि क्या मेरी मां का देहांत हो चुका है। मेरे पिता ने पूछा कि उन्हें यह सब कैसे पता। उन्होंने बताया कि सुबह उन्हें एक सपना आया था कि गुरुजी पंजाबी बाग से आ रहे थे और जब उन्होंने गुरुजी से पूछा कि वो वहां इतनी सुबह क्यों गए थे तो गुरुजी ने कहा कि वो गुलशन के लिए वहां गए थे। इस तरह सुरेंदर जी को पता चला था कि मेरी मां गुजर गई थीं।

मेरे मन में एक ख्याल ये भी आता है कि गुरुदेव के जितने भी शिष्य और भक्त, इस दुनिया को छोड़कर जा चुके हैं, वो शायद इस दुनिया के दायरे से बाहर, अलौकिक जगत में गुरुदेव के साथ वक्त बिताते हैं और उनके मिशन में उनकी मदद करते हैं। मैं इसे जिंदगी के बाद का जश्न तो नहीं कहूंगा क्योंकि इस तरह की गंभीर पॉडकास्ट में ऐसा कहना मुनासिब नहीं होगा। मैं अपनी बात करूं, तो मुझे भी इस गैंग में शामिल होने का इंतजार है, जो अलौकिक संसार में रहकर लोगों की सेवा करते हैं।

अंत में मैं यह कहूंगा कि इस कहानी का सार यह है कि ताकतवर से ताकतवर इंसान भी शिकस्त खा सकता है और कमजोर इंसान भी ऊपर उठ सकता है। लेकिन हर जीत के बाद, हार आती है और इसी तरह हर हार के बाद एक जीत। इसी उतार-चढ़ाव के बीच झूलते रहने की हमारी चेतना की काबिलियत ही इस सफर को जारी रखती है।

हम तो ये कहेंगे कि इस आध्यात्मिक यात्रा में ना तो आप सांप से घबराइए और ना ही सीढ़ियों से अपने दिमाग को सातवें आसमान पर चढ़ाइए। आप अपने इस उतार-चढ़ाव को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकते हैं, बस आपको इस बात पर नजर रखनी है कि आपके साथ, आपके विचारों और आपके अस्तित्व के दूसरे स्वरूपों के साथ, असल में क्या चल रहा है।

ऐसी ऊंचाइयों पर पहुंचने के लिए विश्वास बड़ा कारगर साबित होता है। विश्वास आपकी तकदीर संवारता है, लेकिन उसके बुरे प्रभाव से आपकी भी रक्षा करता है।

कभी-कभी उर्दू शायरी बड़े ख़ास अंदाज में, यह अहसास बयां कर जाती है। उर्दू शायर फैज़ान भी कुछ यूं फरमाते हैं,

सुनते हैं तेरे दर पे बदलती हैं किस्मतें
सुनते हैं तेरे दर पे बदलती हैं किस्मतें
हाजिर हैं अपना भी मुकद्दर लिए हुए
अपना भी मुकद्दर लिए हुए!